अध्याय 20

भारत की अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजी शासन का प्रभाव

इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजों के आगमन का क्या प्रभाव पड़ा ? अपना देश जब अंग्रेजों का उपनिवेश बन गया तो सारे देश की आर्थिक हालत काफी खराब हो गई थी। पूर्व में हमारे व्यापारिक सम्बन्ध दुनिया के कई देशों के साथ थे किन्तु अंग्रेजों का उपनिवेश बनने के बाद देश के आर्थिक हालात खराब होने लगे।

भारत का बाहरी दुनिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध

कक्षा 6 में हमने पढा था कि हमारे व्यापारिक सम्बन्ध दक्षिणी, पश्चिमी व पूर्वी एशिया तथा रोम के साथ थे। हिन्दुस्तान से कपड़ा, अनाज, धातु का सामान आदि दुनिया को भेजा जाता था। बदले में बाहर से सोना चाँदी हिन्दुस्तान में आता था। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशों में बने हुए किसी भी सामान के लिये भारत में माँग नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वहाँ बनी चीजों का भारत आयात भी करता। हालात ऐसे थे कि भारत में सोना केवल आता था, यहाँ से बाहर नहीं जाता था। सम्भवतया इसी कारण भारत को सोने की चिड़िया कहते थे। व्यापार का यह सिलसिला कुछ फेर–बदल के साथ कई सदियों तक चलता रहा।

उपनिवेश क्या होता है ?

आधुनिक इतिहास में यह शब्द आम तौर पर एक देश का दूसरे देश पर सैन्य अधिकार की स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब कोई शक्तिशाली देश अन्य किसी देश पर आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से अधिकार कर लेता है तो वह देश जिस पर अधिकार कर लिया जाता है, उपनिवेश कहलाता है।

तात्कालिक भारत की आर्थिक स्थिति

पन्द्रहवीं–सोलहवीं सदी में स्पेन के लोगों ने अमेरिका की खोज के बाद अमेरिका में लूट–पाट का एक भयानक ताण्डव रचा। अमेरिका से काफी मात्रा में सोना–चाँदी लूटकर स्वयं के देश में लाया गया। इससे यूरोप में हिन्दुस्तान के सामान को खरीदने लायक सम्पन्नता आ गई।

पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक आते–आते पुर्तगाल के एक नाविक ने जिसका नाम 'वास्कोडिगामा' था, समुद्री रास्ते से भारत आने का मार्ग ढूँढ निकाला। फिर तो यूरोप के व्यापारी ज्यादा से ज्यादा तादाद में हिन्दुस्तान आने लगे।

इस समय यूरोप के व्यापारी कम्पनियाँ बना कर दूर–दराज के इलाकों में व्यापार करने लगे थे। पुर्तगालियों ने अरब सागर के समुद्री रास्ते पर नाके स्थापित कर रखे थे। वहाँ से आने–जाने वाले प्रत्येक जहाज से वे चूंगी वसूल करते थे। जो चूंगी न देता उस पर हमला किया जाता। यह तब तक चलता रहा, जब तक अंग्रेज कम्पनी के जहाजों ने तोपों के दम पर समुद्र पर अपना सामरिक वर्चस्व कायम नहीं कर लिया।

अठारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक अंग्रेज कम्पनी हिन्दुस्तान के साथ व्यापार करने वाली सबसे बड़ी यूरोपीय कम्पनी बन गई। सूरत बन्दरगाह से बीच–बीच में मुगल साम्राज्य के साथ कम्पनी की लड़ाई भी हुई। लड़ाई में कई बार मुगल सेनाओं ने कम्पनी को हराया तथा कम्पनी के अधिकारियों द्वारा माफी मांगने पर उन्हें छोड़ा भी गया।

गतिविधि–

1. यूरोप के देशों में भारतीय सामान खरीदने लायक सम्पन्नता आ गई। कैसे ?
2. यूरोप से समुद्री रास्ते से होकर भारत आने का मार्ग एक पुर्तगाली नाविक ने खोज निकाला। उस नाविक का नाम क्या था ?
3. नाके किसे कहते हैं ?

1717 ई. में मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने अंग्रेज कम्पनी को एक फरमान दिया। इसमें यह कहा गया कि कम्पनी अब मुगल सम्राट को सालाना 3000 रुपये देगी और इसके एवज में कम्पनी सारे देश में बगैर चूंगी दिए व्यापार कर सकती है। इस तरह कम्पनी को हिन्दुस्तान में अपना व्यापार बढाने का मौका मिल गया। आने वाले समय में अंग्रेज कम्पनी ने लगभग सारी यूरोपीय कम्पनियों को बन्दूक के दम पर देश से मार भगाया तथा यहां के सारे व्यापार पर वर्चस्व स्थापित कर लिया। इस तरह कम्पनी को बन्दूक के बल पर व्यापार करने का चस्का लग गया था। बन्दूक के दम पर उसने भारत के मुगल सम्राट एवं बंगाल के नवाब को भी दबा दिया। बंगाल में कम्पनी के व्यापारी अपना कारोबार जोर–जबरदस्ती से करने लगे।

भारत के उद्योगों पर कम्पनी का प्रभाव

प्लासी की लड़ाई (1757) में विजय के बाद कम्पनी के लिये यह सम्भव हो गया कि वह बंगाल में दहशत का राज फैला सके। अपनी नई प्राप्त शक्ति के बल पर यहाँ के कारीगरों को कच्चा माल बढे दामों पर देते थे और उनसे बना हुआ सामान एक चौथाई से भी कम दामों पर खरीदते। परिणाम यह रहा कि आने वाले बीस वर्षों में तो कारीगर अपना काम छोड़कर भाग गए या फिर उनकी कमाई इतनी कम हो गई कि वे अब भुखमरी के कगार पर पहुंच गए। कहाँ तो बंगाल से कोई 90 किस्म का कपड़ा बनकर यूरोप के बाजारों में जाता था और कहाँ अठारहवीं सदी के अन्त तक बंगाल का लगभग सारा का सारा कपड़ा उद्योग ही नष्ट हो गया। लोग यहाँ तक मानने लगे थे कि अंग्रेज कम्पनी ने ढाका में मलमल की साड़ी बनाने वाले कारीगरों के अंगूठे काट डाले। इन कारीगरों के सम्बन्ध में यह मशहूर था कि इनकी बनाई साड़ी इतनी महीन होती थी कि उसे अंगूठी में से निकाली जा सकती थी। किन्तु अंग्रेजों ने इनका भारी शोषण किया इसमें सन्देह नहीं कि इस समय कम्पनी के हाथों गरीब जुलाहों को कष्ट और उत्पीड़न मिला।

अंग्रेजों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का शोषण

भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यह देश उस समय के यूरोप की तुलना में उन्नत और समृद्ध था। लेकिन अंग्रेजों के शासन के काल में अंग्रेजों ने इस देश का जिस तरह शोषण किया गया उससे यहाँ की समृद्ध अर्थव्यवस्था टूट गई और देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया। शोषण के लिए अंग्रेजों द्वारा भिन्न–भिन्न तरीके अपनाए गए, उनमें से कुछ तरीकों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

अंग्रेजों का दमन चक्र

1. **प्रत्यक्ष लूट–मार–** व्यापार के नाम पर अंग्रेज प्रत्यक्षरूप

से लूटमार करते थे। कम्पनी के एजेन्ट किसानों, व्यापारियों आदि को जबरदस्ती एक चौथाई कीमत देकर उनके माल और उत्पादन को हड़प लेते थे तथा किसानों आदि के साथ मारपीट कर वे अपनी एक रुपये की चीज को पाँच रुपये में बेचते थे। जो कम्पनी की अनुचित माँगों को नामंजूर करते, उन्हें कोड़ा मारा जाता अथवा कैद में रखा जाता। मीर कासिम ने कम्पनी गर्वनर को 1762 ई. में इस आशय का पत्र लिखकर विरोध भी किया था।

2. **मालगुजारी–** शोषण का दूसरा स्वरुप मालगुजारी था। कम्पनी द्वारा वसूल की जाने वाली मालगुजारी किसानों को लूटने का सीधा तरीका था। इसमें कम्पनी के अधिकारी मनमाने ढंग से किसानों से मालगुजारी वसूल करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि किसानों ने खेती करनी बन्द कर दी। इससे किसानों के खेत उजड़ गए। एक अंग्रेज अधिकारी ने कहा था–''बीते दिनों में बंगाल के गाँव विभिन्न जातियों के लोगों से भरे पड़े थे और पूर्व में वाणिज्य, धनसम्पदा व उद्योग के भण्डार थे, लेकिन हमारे कुशासन ने 20 वर्षों में ही इन गाँवों के बहुत सारे हिस्सों को बंजर बना दिया है। खेतों में अब खेती नहीं की जाती। किसान लुट चुके हैं। औद्योगिक निर्माताओं का दमन किया जा चुका है।''

गतिविधि–

आओ चर्चा करें

1. मालगुजारी का क्या आशय है ?
2. मालगुजारी द्वारा शोषण किस प्रकार होता था ?

3. **एक तरफा मुक्त व्यापार नीति–** इंग्लैण्ड अपने कारखानों में बनी वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचना चाहता था। लेकिन यह भारतीय वस्तुओं की तुलना में घटिया होने के कारण सम्भव नहीं था। इसलिए भारतीय उद्योगों को जानबूझ कर नष्ट किया गया। इस काल में मुक्त व्यापार की एक तरफा नीति अपनाई गई, जिसके अन्तर्गत इंग्लैण्ड में भारत के बने सूती वस्त्रों के आयात पर भारी शुल्क लगाया गया, जबकि भारत द्वारा इंग्लैण्ड से आयात पर किसी तरह का कोई शुल्क नहीं था।

यह भी जानें

भारत के साथ व्यापार करने के लिए अंग्रेजों द्वारा उस समय बहुत बड़े जहाजों का इस्तेमाल किया जाता था। इन जहाजों को ईस्ट इण्डियन मैन कहा जाता था।

4. **सम्पत्ति का निकास–** कराधान के द्वारा एकत्रित राशि तथा मुनाफे के रुप में एकत्रित सम्पति को अंग्रेज अपने देश में ले जाते रहे एवं उसका इस्तेमाल अपने देश में करते रहे। इससे अपने देश की सम्पति का निकास इंग्लैण्ड के लिए होता रहा, जिससे भारत में अपनी ही सम्पति का लाभ अपने देशवासियों को

दादा भाई नौरोजी, जिसने ब्रिटिश शासन के आर्थिक परिणामों की बहुत तीखी आलोचना की तथा सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध किया।

दादा भाई नौरोजी

नहीं मिला। इसे सम्पति का निकास कहते हैं। इतिहासकारों का मत है कि यदि ऐसा न हुआ होता तो आज यूरोप और अमेरिका इतने विकसित नहीं होते। इसका तात्पर्य यह है कि भारत के विकसित अर्थतंत्र के पतन का मुख्य कारण भी यही है।

5. **कानून बनाकर–** सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में बड़ी मात्रा में सस्ते और बढिया कपड़े का इंग्लैण्ड में आयात हुआ। ये कपड़े लोगों को इतने पसन्द आए कि कपड़ों के इंग्लैण्ड के उत्पादक गम्भीर रुप से डर गए। अतः सन् 1700 व 1712 में पार्लियामेण्ट में कुछ खास कपड़ों को छोड़कर बाकी के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी गई।

गतिविधि–

आओ चर्चा करें

1. ईस्ट इण्डियन मैन किसे कहा जाता था ?
2. सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध करने वाले भारतीय व्यक्ति कौन थे ?
3. इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट ने भारतीय कपड़ों के इस्तेमाल पर पाबन्दी क्यों लगाई ?

6. **औद्योगिकरण विरुद्ध नीति–** अंग्रेज पूंजीपति भारत में औद्योगिकरण के विरोधी थे। इसलिए उन्होंने वहाँ केवल वही उद्योग स्थापित किए, जिसकी स्थापना करना वहाँ पर भौगोलिक रुप से मजबूरी थी यथा जूट उद्योग। शेष सारे उद्योग अपने देश में स्थापित किए तथा कच्चा माल यहाँ से इंग्लैण्ड ले जाया गया और निर्मित माल हिन्दुस्तान की बाजारों में बेचा गया। इससे भारत के उद्योगपति उनकी प्रतियोगिता में ठहर नहीं सके तथा वे बरबाद हो गए।

इसी दृष्टि से बंगाल में जूट उद्योग की स्थापना की गई। बागान उद्योगों में चाय, कहवा व नील उद्योगों का विकास किया। जिन क्षेत्रों में खनिज सम्पति बड़ी मात्रा में थी, वहाँ पर भी उद्योगों की स्थापना नहीं की गई बल्कि वहाँ से खनिज वस्तुओं को स्वदेश ले जाया गया। यह कार्य सुविधा से हो,इसलिये देश के भीतरी हिस्सों एवं बन्दरगाहों को सड़क और रेलों द्वारा जोड़ा गया।

उन्नीसवीं सदी में यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति का भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

उन्नीसवीं सदी में यूरोप में विशेषकर इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। अब वहाँ मशीनों से सामान बनाया जाने लगा। मशीनी सामान की गुणवता हाथ से बनी वस्तु से श्रेष्ठ होती थी। साथ ही उसके दाम भी कम होते थे। ऐसी स्थिति में हाथ से बनी वस्तुओं की मांग बाजार में कम होने लगी।

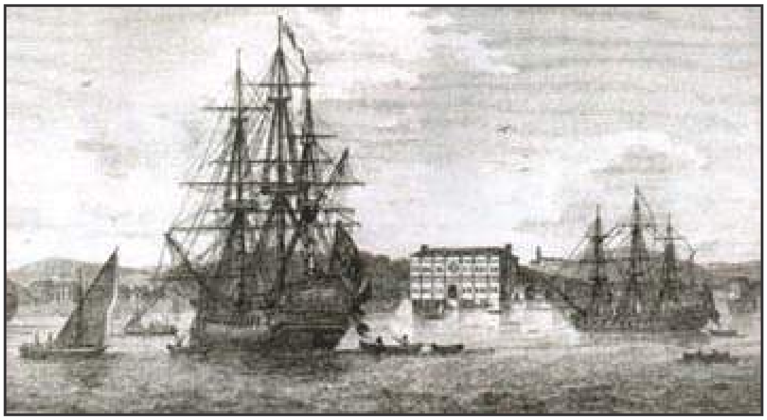

बॉम्बे हार्बर अठारहवीं सदी के आखिर का चित्र

परिणाम यह हुआ कि हाथ से काम करने वाले कारीगर, हस्तशिल्पी आदि बेरोजगार हो गए। इस तरह बंगाल

एवं भारत के अन्य क्षेत्रों के अनेक हस्तशिल्प भी खत्म हो गए। इस प्रक्रिया को इतिहासकारों ने विऔद्योगीकरण कहा अर्थात् भारतीय परम्परागत उद्योगों के नष्ट होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई।

बम्बई और कलकता 1780 के दशक से व्यापारिक बन्दरगाहों के रुप में विकसित होने लगे थे। यह पुरानी व्यापारिक व्यवस्था के पतन और औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के विकास का समय था।

मछलीपट्टनम का एक दृश्य, 1672

मछलीपट्टनम सत्रहवीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह के रुप में विकसित हुआ। अठारहवीं सदी के आखिर में जब व्यापार बम्बई, मद्रास और कलकता के नए ब्रिटिश बन्दरगाहों पर केन्द्रित होने लगा तो उसका महत्व घटता गया।

गतिविधि–

कक्षा में चर्चा करें–

(1) अंग्रेजों ने भारत में केवल वही उद्योग स्थापित किए, जिनकी स्थापना करना उनकी मजबूरी थी। शेष सारे उद्योग उन्होंने इंग्लैण्ड में स्थापित किए।

शब्दावली

उत्पाद	–	उत्पादित वस्तुएँ
औद्योगिक क्रान्ति	–	हाथों के बजाए मशीनों से उत्पादन करना।
नाके	–	चूँगी वसूल करने वाले स्थान

अभ्यास प्रश्न

1. प्रश्न संख्या एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए–

(1) अंग्रेजों द्वारा किसानों को लूटने का सीधा तरीका था –

(अ) प्रत्यक्ष लूटमार द्वारा (ब) माल गुजारी द्वारा

(स) कानून बनाकर (द) मुक्त व्यापार नीति द्वारा ( )

(2) सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध किया था–

(अ) मोतीलाल नेहरु ने (ब) महात्मा गॉंधी ने

(स) दादा भाई नौरोजी ने (द) सरदार पटेल ने ( )

2. भाग 'अ' को भाग 'ब' से सुमेलित कीजिए :–

	भाग 'अ'	भाग 'ब'
1.	प्लासी की लड़ाई सन् में हुई	
2.	मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने अंग्रेज कम्पनी को बिना चूँगी दिए सम्पूर्ण भारत में व्यापार करने का फरमान दिया	1717 ई.
		1762 ई.
3.	मीर कासिम ने कम्पनी गर्वनर को भारतीय किसानों पर अत्याचार न करने के लिए पत्र लिखा	1700 ई.
4.	इंग्लैंड की पार्लियामेंट ने कुछ खास कपड़ों को छोड़कर बाकी के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी।	1757 ई.

3. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. विऔद्योगीकरण क्या होता है ?
2. एक तरफा मुक्त व्यापार नीति क्या है ? इससे भारत के विदेशी व्यापार को किस प्रकार हानि हुई ?
3. उन्नीसवीं सदी में यूरोप का औद्योगिक क्रान्ति का भारत की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. मच्छलीपट्टनम् बन्दरगाह का महत्व कम होने के कारण बताइए।

गतिविधि–

1. विश्व का नक्शा लेकर उसमें उन स्थानों को चिह्नित करें जहाँ से भारत का अन्य देशों के साथ विदेशी व्यापार होता था ?
2. ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए जिनकी प्राचीन काल में विदेशों में माँग थी ।
3. एक निबंध लिखें जिसमें भारत की प्राचीन काल एवं औपनिवेशिक काल की अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक विवरण हों ।